मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2021-23 /R.N.I. No. 2022007062

अदालत का आदेश लागू करो लखानी मज़दूरों की ललकार 2
मॉडल टाउन में नगर निगम ने दो इमारत सील कीं 4
मोदी के शासनकाल में बैंकों के 25 लाख करोड़ के लोन बट्टे खाते में गये 5
गाजा में इजराइल कर रहा जनसंहार 6
सांसों में ज़हर घोलती प्रदूषण की सरकारी दुकान 8

वर्ष 37 अंक -50 फरीदाबाद 29 अक्टूबर-4 नवम्बर 2023 फोन-8851091460 ₹ 5.00

बेखौफ गुंडों के बढ़ते हौसले, पुलिस हुई नाकारा

बेटी से छेड़छाड़ करने को रोका तो कर दी हत्या

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) दिनांक 24 अक्टूबर की रात को सेक्टर 86 की प्रिंसेस पार्क सोसायटी के निवासी अपनी सोसायटी में ही एक धार्मिक आयोजन के दौरान डांडिया नृत्य कर रहे थे। इसी दौरान सोसायटी में ही किराये पर नये-नये आकर बसे लक्की व संदीप खटाना एडवोकेट अपने एक अन्य दोस्त के साथ पूजा पंडाल में आ घुसे। आते ही इन्होंने एक परिवार की महिलाओं से छेड़खानी शुरू की, लेकिन उनके कड़े विरोध के कारण पीछे हट कर ये तीनों लफंटर प्रेम मेहता परिवार की ओर लपके। इन्होंने दिल्ली यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाली मेहता की बेटी कनिका को पकड़ कर खींचा, उसका मोबाइल नम्बर मांगते हुए अपने साथ नाचने को कहा। बेटी के साथ होती अभद्रता को देख कर मां ज्योति ने विरोध किया तो इन गुंडों ने उन्हें भी धमका दिया। वहीं मौजूद कनिका का छोटे भाई विरोध करने आया तो उसकी भी न केवल अच्छी-खासी पिटाई कर दी बल्कि उसके कपड़े भी फाड़ दिये। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप जब कनिका के पिता इन गुंडों को समझाने आये तो बेखौफ़ गुंडों ने उनके साथ भी हाथापाई करते हुए ऐसा धक्का मारा कि उनकी मृत्यु हो गई।

सुधी पाठक समझ चुके होंगे कि यह वारदात किसी सुनसान जगह पर न होकर सोसायटी के उस पंडाल में हुई जहां उस वक्त सैंकड़ों परिवार मौजूद थे। किसी ने भी इन गुंडों को रोकने एवं उनसे निपटने की जरूरत नहीं समझी। इस भीड़ के बीच में प्रेम मेहता की हत्या होना तो दुखदायी है ही लेकिन इससे भी बड़ा दुखदायी सोसायटी निवासियों का उदासीन होना है। यदि सोसायटी के लोग एकजुट होते तो तीन गुंडों की क्या मजाल जो पहले एक परिवार की महिला और फिर मेहता परिवार की महिला पर हाथ डाल पाते? सोसायटी निवासियों की यह उदासीनता न केवल शर्मनाक है बल्कि बहुत ही खतरनाक भी है। गुंडों द्वारा इस तरह की छेड़छाड़ अब बहुत आम बात हो चुकी है। यदि प्रेम मेहता की मौत न हुई होती तो इस वारदात का किसी को पता भी न चलता। पुलिस एवं प्रशासन का यही लचर रवैया गुंडों को इस तरह की हरकतें करने के लिये प्रेरित करता है।

गुंडों की इस बेखौफ़ गुंडागर्दी के पीछे एक और बड़ा कारण आरडब्लूए के प्रधान छाबड़िया व महासचिव चहल के साथ इनके मधुर संबंधों को भी समझा जाता है। छाबड़िया को केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर का निकट सम्बन्धी बताया जाता है। इस नाते संदीप खटाना व छाबड़िया बिरादरी भाई तो हो ही गये, फिर डर काहे का? यही रिश्ता उनके घटनास्थल से फरार हो जाने व पुलिस की ढिलाई के रूप में सामने आया। सोसायटी वासियों के हौसले देख कर तो नहीं लगता है कि कोई गवाही देने को भी तैयार होगा। प्रेम मेहता भी इसी समाज के अंग थे। ये लोग अपने सामने एक-एक कर दूसरों को मरता तो देख सकते हैं लेकिन एकजुट होकर गलत का विरोध नहीं कर सकते।

रात के करीब एक बजे हुई इस वारदात की एफआईआर थाना खेड़ी पुलिस द्वारा सुबह करीब छः बजे दर्ज की गई। इसमें केवल गैर इरादतन हत्या की धारा 304 लगाई गई। पुलिस ने कनिका की मां, भाई व खुद उसके साथ हुई वारदात से सम्बन्धित कोई धारा लगाने की जरूरत नहीं समझी। जाहिर है कि इससे अपराधियों को फरार होने के लिये पर्याप्त समय मिल गया जो खबर लिखे जाने तक गिरफ्तार नहीं किये जा सके।

मिली जानकारी के अनुसार मेहता परिवार के साथ थाने गये अन्य पीड़ित ने पुलिस को उनके परिवार के साथ उन्हीं गुंडों द्वारा की गई हरकतों की भी जानकारी दी थी जिसे पुलिस ने न केवल अनसुना कर दिया बल्कि उस पीड़ित को अकेले में ले जा कर कुछ समझा भी दिया। यहीं से अपराधियों के प्रति पुलिस की नीयत को समझा जा सकता है।

दरअसल पुलिस एवं प्रशासन स्वतः कभी भी नाकारा नहीं होता। इसे राजनेताओं एवं उनके चापलूस उच्चाधिकारियों द्वारा नाकारा बना दिया जाता है। ऐसी ही कुछ गंध इस केस में भी महसूस की जा रही है। सर्वविदित है कि नहर पार यानी कि ग्रेटर फ़रीदाबाद के पूरे इलाके पर केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर का वर्चस्व छाया है।

पुलिस हो या कोई अन्य महकमा, सब उन्हीं के इशारों पर भरतनाट्यम करते हैं। लगभग तमाम सोसायटियों पर गूजर सेना का नियंत्रण बना हुआ है। उनके सामने वहां रहने वाले नागरिकों की कोई हैसियत नहीं समझी जाती। लगभग तमाम सोसायटियों में इन्हीं के गुंडे बतौर सिक्योरिटी गार्ड तैनात हैं। इसके एवज में सोयायटी वासियों से ही इस या उस नाम पर वसूली की जाती है। जरा भी मुंह खोलने वालों का 'इलाज' ये लोग तुरन्त कर देते हैं। पीड़ितों की कोई सुनवाई कहीं होती नहीं यदि यही हाल चलता रहा तो यह पूरा क्षेत्र अपराधगढ़ बनकर रह जायेगा। अपहरण व फिरौतियों का बड़ा धंधा यहां चल निकलेगा।

शिक्षा के नाम पर एक और नौटंकी सैनिक स्कूल तो 'खोल दिये' अब 'पीएम श्री' खोलेंगे खट्टर

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) पूरी तरह से दिवालिया हो चुकी शिक्षा नीति पर पर्दा डालने के लिये भाजपा सरकार नित्य नई-नई घोषणाएं करने में जुटी है। इन घोषणाओं से भाजपा नीति की पुष्टि होती है कि धरातल पर कुछ काम करने की जरूरत नहीं केवल काम का ढोल पीटना काफ़ी होता है।

बीते सप्ताह सैनिक स्कूल कुंजपुरा में भाषण बघारते हुए मुख्यमंत्री खट्टर ने राज्य के हर ज़िले में सैनिक स्कूल खोलने का जुमला छोड़ा था। अब राज्य में 280 'पीएम श्री' स्कूल खोलने की घोषणा की है। वैसे इससे पहले मॉडल संस्कृति स्कूल खोलने का नाटक भी खट्टर जी कर चुके हैं। 'पीएम श्री' स्कूल केन्द्र सरकार की एक योजना का नाम है। इनका उद्घाटन करने के लिये केन्द्रीय मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान 25 अक्टूबर को रोहतक पहुंचे जहां से खट्टर के साथ मिलकर राज्य भर में ऐसे कुछ स्कूलों का श्री गणेश किया गया।

ये कितना बड़ा पाखंड है इसे समझना बहुत जरूरी है। सबसे पहली बात यह है कि इसके नाम पर कोई नया स्कूल बनने नहीं जा रहा और न ही कोई नया स्टाफ़ भर्ती होने वाला है। खट्टर सरकार के टूटे-फुटे जर्जर स्कूलों पर ही लीपा-पोती करके 'पीएम श्री' के फट्टे लगा दिये जायेंगे। स्टाफ़ की कमी को कुछ हद तक पूरा करने के लिये दूसरे स्कूलों से लाकर यहां तैनात कर दिया जाएगा। जाहिर है जिन स्कूलों से स्टाफ़ लाया जायेगा वहां पहले से चली आ रही कमी और बढ़ जायेगी। स्कूलों की लीपा-पोती एवं रंग-रोगन आदि करने के लिये फ़िलहाल 50-50 लाख प्रति स्कूल दिये गये थे। इसके बावजूद जिन स्कूलों की लीपा-पोती ठीक ढंग से नहीं हो पाई उन पर यह फट्टा अभी नहीं लग पाया। फरीदाबाद के लिये ऐसे नौ स्कूल चिह्नित किये गये थे लेकिन फट्टा केवल तीन स्कूलों पर ही लग पाया। लगभग यही स्थिति राज्य के अन्य ज़िलों की भी है।

शेष पेज 8 पर

बहरों तक आवाज पहुंचाने की कोशिश करने वाले क्रांतिकारी युवकों को लोकतंत्र की आवाज दबाने वाली पुलिस ले गयी